Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

शिक्षा मनोविज्ञान के शौक्षिक निहितार्थ

डॉ.राम अवतार कापर
सहायक प्रध्यापक सामाजिक विज्ञान संकाय (मनोविज्ञान) ल. न. मि. स्मारक महाविद्यालय, विरपुर
भूपेन्द्र नारायण मंडल वि.लालूनगर, मधेपुरा।
Email -ramavtar2881974@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170925
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp.127-129
September 2025
Submitted:23 Aug. 2025
Revised: 4 Sept. 2025
Accepted: 21 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

शोध सारांश

शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक प्रयुक्त शाखा है। इस शाखा का प्रमुख उद्देश्य शिक्षको को ऐसी क्षमताये प्रदान करता है जिससे वे शिक्षार्थी के व्यवहारों को विभिन्न स्तरो पर समझ सके, उनके व्यवहार पर नियंत्रण स्थापित कर सके तथा उनके बारे में पूर्वकथन कर सकें। मनोविज्ञान की अध्ययन विधियों विद्यार्थी के व्यवहार को समझने योग्य बनाती है। शिक्षा मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान जब से माना गया है, तब से ही इसका महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका महत्व सर्वाधिक शिक्षकों के लिए है। शिक्षण में अध्यापक का सीधा सम्बन्ध विद्यार्थी से होता है। वह विद्यार्थी को प्रगति को राह दिखाने वाला एक मार्ग प्रदर्शक है। यदि वह उचित तथा वैज्ञानिक विधियों से अपने विषय का ज्ञान विद्यार्थी तक पहुँचाता है तो वह निः सन्देह हो उसके व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इस प्रकार के ज्ञान से वह शिक्षक अपने शिक्षण को पर्याप्त मात्रा में सुधार कर सकता है तथा अपने शिक्षण को प्रभावपूर्ण बन सकता है। अतः कहा जा सकता है। कि वर्तमान समय में शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य बदलती हुयी सामाजिक व्यवस्था में कुशल आत्म निर्देशन की योग्यता में वृद्धि व्यक्तिगत का अभिवर्द्धन और उसका सन्तुलित विकास करना तथा मानव स्वभाव को समझने में अध्यापाक की सहायता करना है।

मुख्य शब्द :– *निहितार्थ, अभिवर्द्धन, निर्देशन, मूल्यांकन, समायोजन, अनुसंधान, प्रशिक्षण, आलोचनात्मक, निर्गतता।*

प्रस्तावना :–

भारत में शिक्षा मनोविज्ञान के विकास ने एक विभिन्न मार्ग अपनाया। पुरातन के ऋषियों के अपने आत्म को समझने की चेष्टा की तथा नश्वरवान संसार से उनका क्या संबंध है इसे जानने को और प्रयास किये। इस प्रकार की खोज उन्हें मानव व्यक्तित्व के ज्ञान की और ले गयी। उन्होंने जानना चाहा कि मानव व्यक्ति का विकास कैसे होता है और वह किस प्रक्रिया द्वारा परम सत्य की और आकषित हो जाता है। यह प्रक्रिया ही शिक्षा कही गयी और मानव व्यक्तित्व का ज्ञान मनोविज्ञान कहा गया। इस प्रकार से भारत वर्ष में शिक्षा मनोविज्ञान का प्रारंभ परम सत्य की दार्शनिक खोज से जुड़ा बंधा है शिक्षा मनोविज्ञान एक बहुत पुरातन मनोविज्ञानिक विषय है इसमें शामिल है वह मनोविज्ञानिक प्रकरण जो शिक्षा से सम्बन्ध है। यह लगभग 100 वर्ष पहले अपने मूलस्व में सामने आया। यह समय प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के प्रारंभ से मेल खाता है विलियम बुन्ट की मनोविज्ञान संस्था लिपिग्ज में वर्ष 1879 में स्थापित हुई उस समय से इसके विषय के संबंध से अनेक परिवर्तन आये।[1]

प्रारंभ में शिक्षा मनोविज्ञान से तात्पर्य सामान्य मनोविज्ञान के ज्ञान का प्रयोग शिक्षा के ज्ञान का प्रयोग शिक्षा के सिद्वान्त और अभ्यास से करना था। मानव स्वभाव के ज्ञान के द्वारा अध्यापक बालकों का उचित निर्देश देने और उनका पथ–प्रदर्शन करने सफल होता है। उचित मार्ग प्रदर्शन मिलने पर बालक सामाजिक परिस्थितियों से सामाजस्य स्थापित करने और सामाजिक दायित्यों का भली–भॉति निर्वाह करने सफल होता है। अतः शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य बालकों में सदाचार की भावना विकसित करना है। शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य अध्यापाक को तथ्यों और सामान्यीकरण से अवगत करवाकर उसके कार्य में सहायता देना है जिससे वह बालक को उसके सन्तुलित व्यक्तित्व के निर्माण में सहायता दे सके। वर्तमान युग की आवश्यताओं का अनुभूति करते हुये मैने शिक्षा मनोविज्ञान के शैशिक्ष निहितार्थ को अपने शोध लेख का विषय बनाते हुये शिक्षा मनोविज्ञान के शैक्षिक निहितार्थ को समसामायिक दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यह दृष्टिकोण पिछली शताब्दी के दुसरे अर्द्धकाल मे विकसित हुआ जबकि मनोविज्ञान एक विज्ञान की भॉति दर्शनशास्त्र से अलग होकर पनपने लगा। एक स्वतन्त्र वैज्ञानिक विषय का उभसा प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के बहुधा उन मसलों पर अनुसंधान किये जो कि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से शौक्षिक समस्याओं से जुड़े हुये थे।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.राम अवतार कापर , सहायक प्रध्यापक सामाजिक विज्ञान संकाय (मनोविज्ञान) ल. न. मि.स्मारक महाविद्यालय, विरपुर भूपेन्द्र नारायण मंडल वि.लालूनगर, मधेपुरा।

How to cite this article:
कापर, . राम . अवतार . (2025). शिक्षा मनोविज्ञान के शौक्षिक निहितार्थ. Journal of Research and Development, 17(9(A)), 127–129. https://doi.org/10.5281/zenodo.17510901

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17510901
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान ने भी शिक्षा विषेशज्ञों का सहयोग अपने प्रयोगों के फलों के मूल्यांकन के लिये किया। उनके फलों की सत्यता पर विचार करने को कहा गया और उनकी सहायता इस और मांगी कि क्या वह फल शिक्षण में सहायक है। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के फलों ने शिक्षकों का ध्यान मनोविज्ञान की और आकर्षित किया और उनकी रूचि ने उस मनोविज्ञान की उस शाखा के विकास को प्रोत्साहित किया जिसका निशाना शिक्षा विज्ञान की सहायता देना था। इस मनोविज्ञान को शिक्षा मनोविज्ञान कहा गया।[2]

शिक्षा की महत्वपूर्ण समस्याओं के समाधान में मनोविज्ञान मदद करता हैं और यही सब समस्याएं व उनका समाधान शिक्षा मनोविज्ञान का कार्य क्षेत्र बनते है– शिक्षा कौन दे? अर्थात शिक्षक कैसा हो। मनोविज्ञान शिक्षक को अपने छात्रों को समझाने में सहायता प्रदान करता है साथ ही भी बताता है कि शिक्षक को छात्रों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। शिक्षक का व्यवहार पक्षपात रहित हो। उसमें सहनशीलता, धैर्य व अर्जनात्मक शक्ति होनी चाहिए। शिक्षा के विकास की विशेषताएं समझने में सहायता देता है। प्रत्येक छात्र विकास की कुछ निश्चित अवस्थाओं से गुजरता है जैसे शैशवास्थ (0–2वर्ष) बाल्यावस्था (3–12वर्ष) किशोरावस्था (13–18वर्ष) प्रौदावस्था (18–21वर्ष) विकास की दृष्टि से इन अवस्थाओं की विशिष्ट विशेषताएं होती है। यदि शिक्षक इन विभिन्न अवस्थाओं की विशेषताओं से परिचित होता है। वह अपने छात्रों को भली प्रकार समझ सकता है और छात्रों को उसी प्रकार निर्देशन देखक उनको लक्ष्य प्राप्ति में सहायता कर सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षक को सीखने की प्रक्रिया से परिचित करता है। ऐसा देखा जाता है कि कुछ शिक्षक कक्षा में पढ़ाते समय अधिक सफल साबित होते है तथा कुछ अपने विषय पर अच्छा ज्ञान होने पर भी कक्षा शिक्षण में असफल होते है। प्रभावपूर्ण ढंग से शिक्षण काने के लिए शिक्षक को सीखने के विभिन्न सिद्वान्तों का ज्ञान, सीखने की समस्याओं एवं सीखने को प्रभावित करने वाले कारणों और उनको दूर करने के उपायों की जानकारी होनी चाहिए। वह छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित कर सकता है।[3]

शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्तिगत भिन्नता का ज्ञान प्राप्त कराता है। संसार के कोई भी दो व्यक्ति बिल्कुल एक से नहीं होते है। प्रत्येक व्यक्ति अपने में विशिष्ट व्यक्ति है। एक कक्षा में शिक्षक को 30 से लेकर 50 छात्रों को पढ़ाना होता है जिनमें अत्यधिक व्यक्तिगत भिन्नता होती है। यदि शिक्षक को इस बात का ज्ञान हो जाए तो वह अपना शिक्षण सम्पूर्ण सभी छात्रों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला बना सकता है। व्यक्ति के विकास पर वंशानुक्रम एवं वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है यह मनोविज्ञान बताता है। वंशानुक्रम एवं वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है यह मनोविज्ञान बताता है। वंशानुक्रम किसी भी गुण की सीमा निर्धारित करता है और वातावरण उस गुण का विकास उसी सीमा तक करता है। अच्छा वातावरण भी गुण को उस सीमा के आगे विकसित नहीं कर सकता है। छात्रों के पाठयक्रम बनाते समय मनोविज्ञानिक सिद्धान्त सहायता पहुँचाते है। छात्रों की आवश्यकताओं उनके विकास की विशेषताओं सीखने के तरीके व समाज की आवश्यताएँ यह सब पाठयक्रम में परिलाक्षित होनी चाहिए। पाठयक्रम में व्यक्ति व समाज दोनों की आवश्यकताओं को सम्मिश्रित रूप में रखना चाहिए। शिक्षा मनोविज्ञान बच्चों को शिक्षित करने सम्बन्धी विभिन्न विधियों के बारे में अध्ययन करता है और खोज करता है कि विभिन्न विषयों जैसे गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा साहित्य को सीखने से सम्बन्धित सामान्य सिद्धान्त क्या है।[4]

व्यवहार मनोविज्ञान का एक ऐसा स्कूल है जिसकी स्थापना जे० बी० वाटसन द्वारा वर्ष 1913ई० में जान हापीकन्स विश्वविद्यालय में की गयी। इस स्कूल की स्थापना संरचनवाद तथा कार्यवाद जैसे सम्प्रदायों के विरोध में वाटसन द्वारा की गयी। वह स्कूल अपने काल में विशेषकर 1920 ई० के बाद अधिक प्रभावशाली रहा है जिसके कारण इसे मनोविज्ञान में द्वितीय बल के रूप में मान्यता मिली। वाटसन ने 1913 में साइकोलाजिकल रिव्यू में एक विशेष शीर्षक के तहत प्रकाशित किया गया। यही से व्यवहारवाद का औपचारिक शुभारम्भ माना जाता है। जे० बी० वाटसन ने व्यवहारवाद के माध्यम से मनोविज्ञान में कान्तिकारी विचार रखे वाटसन का मत था कि मनोविज्ञान की विषय–वस्तु चेतन या अनुभूति नहीं हो सकता है। इस तरह के व्यवहार का प्रेक्षण नहीं किया जा सकता है। इनका मत था कि मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है। व्यवहार का प्रेक्षण भी किया जा सकता है तथा मापा भी जा सकता है। उन्होंने व्यवहार के अध्ययन की विधि के रूप में प्रेक्षण तथा अनुबंधन को महत्वपूर्ण माना वाटसन में मानव प्रयोज्यों के व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए शाब्दिक रिपोर्ट की विधि अपनायी जा लगभग अन्तनिरीक्षण विधि के ही समान है। वाटसन ने सीखना, संवेग तथा स्मृति के क्षेत्र में कुछ प्रयोगात्मक अध्ययन किये जिनकी उपयोगिता तथा मान्यता आज भी शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अधिक मानक है।[5] शिक्षा मनोविज्ञान का विकास सन् 1950 ई० के पश्चात बहुत तेजी से हुआ है। विभिन्न क्षेत्रों शिक्षा मनोविज्ञान पर अनुसंधान बहुत तेजी से हो रहे है। अनुसंधान कार्य अनके दिशाओं में हो रहे है। इसमें से चार महत्वपूर्ण दिशाएं जिसमें बहुत से अनुसंधान हो रहे है वे है।

- ❖ सीखना अथवा अधिगम
- ❖ सीखने के लिये तैयारी जिसमें रूचि प्ररेणा इत्यादि उप विषय आते है।
- ❖ मनसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक समायोजन

शिक्षा मनोविज्ञान की अवधारण शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तो तथा नियमों का प्रयोग शैक्षिक परिस्थितियों में करता है। शिक्षा मनोविज्ञानिक में विशेश व्यक्तियों शिक्षक तथा शिक्षार्थी के व्यवहार का अध्ययन विषेश शैक्षिक परिस्थितियों कक्षा परिस्थियों में किया जाता है किन्तु आजकल शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक अति विकसित शाखा मानी जाती है। वर्तमान समय में शिक्षा मनोविज्ञान के एक स्वन्त्र विज्ञान बनने के मार्ग पर है। अब वह मनोविज्ञान के नियमों तथ सिद्धान्तों का अन्धानुकरण नहीं करता बल्कि स्वयं प्रयोग तथा अनुसंधान के द्वारा उनकी प्रमाणिकता की जाँच करता है। जब जाँच करने पर वे सिद्धान्त सही उतरने है तब उनका प्रयोग शैक्षणिक परिस्थितियाँ में किया जाता है इस प्रकार सामान्य मनोविज्ञान के प्रति उसका दृष्टिकोण आलोचनात्मक है। दूसरे बात यह कि शिक्षा मनोविज्ञान का कार्य क्षेत्र, समस्याएँ एवं विधियों विशिष्ट है। आज का शिक्षा मनोविज्ञान निकट अवश्य है पर दोनों स्वतन्त्र मार्ग का अनुसरण कर रहे है।[6]

गेटस व अन्य का कथन है कि "शिक्षा सम्बन्धी ऐसे कई तथ्य है जिनका सामान्य मनोविज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं है, जैसे पाठय विषयों का अध्यापन प्रशिक्षण सम्बन्धी कठिनाईयों का निदान तथा निराकरण, शिक्षण उपलब्धियों का मापन, प्रौढ़शिक्षा, शैक्षिक निदेशन आदि विशेष समस्याओं का निराकरण शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा होता है।

- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य
- ❖ बालकों में यह धारणा उत्पन करना
- ❖ अभिवृद्धि को दिशा प्रदान की जा सकती है।
- ❖ सीखा जा सकता है।
- ❖ सामाजिक व्यवहार में सुधार सम्भव है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

- ❖ बालकों के प्रति पक्षपाल रहित और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार विकसित करने में मदद करना ताकि उनके व्यवहार वस्तुनिष्ठ बनाया जा सके।[7]

षिक्षा मनोव्रिज्ञान का विषय क्षेत्र :–

किसी विषय के क्षेत्र से तात्पर्य अध्ययन की सीमा से होता है जिस सीमा तक उस विषय के अन्तर्गत अध्ययन किया जा सकता है और विषय सामग्री से तात्पर्य उस सीमा से होता है जिस तक उसके क्षेत्र में अध्ययन किया जा चुका होता है शिक्षा मनोविज्ञान में मनुष्य की अभिवृद्धि, विकास एवं मानसिक योग्यताओं एवं क्षमताओं के स्वरूप उनकी मापन विधियों का अध्ययन किया जाता है तथा मनुष्य की शिक्षा के क्षेत्र में उनकी अनुप्रयोग कर उसकी शिक्षा को प्रभावशाली बनाने की विधियाँ स्पष्ट की जाती है। यही इसका क्षेत्र है और इसी क्षेत्र से सम्बधित इसकी विषय सामग्री है।[8]

षिक्षा मनोविज्ञान के शैक्षिक निहितार्थ :–

एलिस ने कहा कि 'शिक्षकों को अपने शिक्षण में उन मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करते रहना चाहिए जो सफल शिक्षण और प्रभावशाली अधिगत के लिए अनिवार्य है। अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अत्यन्त लाभदायक हो वरन आवश्यक भी है। केवल शिक्षा मनोविज्ञान ही अध्यापक को व्यवसाय में निपूर्ण बनता है। अध्यापक को सभी प्रकार की विद्यालय परिस्थितियों में शिक्षा में मनोविज्ञान का ज्ञान उपयोगी सिद्ध होता है। शिक्षा मनोविज्ञान की महत्वता को स्पष्ट करते हुये थामस कुलर ने कहा है कि "अध्यापक को छात्रों के स्वभाव का उतना ही अध्ययन करना चाहिए जितना अध्ययन वह पुस्तकों का करता है।" शिक्षा मनोविज्ञान के शैक्षिक निहितार्थ को अग्रलिखित क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करने के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।[9]

अन्तनिहित प्रकृति का ज्ञान :–

शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापक को छात्रों की सहज प्रकृति को समझने में सहायता देता है। बालकों में कई जन्मजात प्रवृतियों प्रेरणाये तथा रूचियों होती है। केवल वही अध्यापक इन मूल प्रवृत्तियों के समुचित विकास में सफल रहता है। जिसकों कि शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान होता है। व्यक्ति विभिन्नताओं का ज्ञान शिक्षण को प्रभावी तभी बनाया जा सकता है जबकि अध्यापक को प्रत्येक बालक की योग्यता, कुशलता, रूचि, स्वभाव, विशेषताओं तथा कमियों का ज्ञान हो। इन सभी प्रकार की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान अध्यापक को शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन से ही होता है। कक्षा में कुछ छात्र अत्यन्त प्रतिभाशाली कुछ सामान्य तथा कुछ कमजोर होते है। यदि अध्यापक को इन विभिन्नताओं का ज्ञान होगा तो वह अपने शिक्षण को छात्रों के अनुरूप ढ़ालने में सफल होगा।[10]

व्यवहार का ज्ञान :–

विकास की विभिन्ना अवस्थाओं में बालक के स्वभाव में भी परिवर्तन आते रहते है। शिक्षा मनोविज्ञान इन विभिन्न विकास की अवस्थाओं में बालक के स्वभाव का जानने के अध्यापक को छात्रों के स्वभाव का ज्ञान होता है। केवल वही अध्यापक अपने शिक्षण को छात्रों के स्वभाव तथा रूचियों के अपुरूष ढाल सकता है। जिस शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान होता है। ऐसे अध्यापक जिन्हे शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान नहीं होता है ऐसा करने में पूर्णतथा असफल रहते है। शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को शिक्षा से सम्बंधित अधिगम के विभिन्न पहलुओं के विश्लेषण तथा समझने में सहायता प्रदान करता है। शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान से अध्यापक अपने शिक्षण के समय अधिगम की अनुकूलतम परिस्थितियाँ बनाये रख सकता है। वह अपनी विषय वस्तु को विभिन्न प्रकार की दृश्य श्रव्य सामग्री के उपयोग अधिक प्रभावशाली सुरूचि पूर्ण बनाकर छात्रों को सीखने के लिये प्रेरित कर सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान के अभाव में ऐसा करने में वह असफल रहेगा।[11]

निष्कर्ष

शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञा नही शिक्षक की सफलता काएक महत्वपूर्ण रहस्य है। इस ज्ञान का सहारा लिए बिना व्यावसायिक जीवन की यात्रा समाप्त कर देनी पड़ती है हमारा यह अकाटय तर्क है कि मनोविज्ञान उसे अपने कर्त्तव्य और दायित्वों का पालन करने में हर क्षण, हर घड़ी सहायता और मार्ग प्रदर्शन करता है। अतः सार रूप में कहा जा सकता है। कि शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षक का मार्ग ही केवल कक्षागत शिक्षा के लिये प्रशस्त नहीं किया है बल्कि उसने शिक्षकों अभिभावकों, छात्रों एवं समा जमें व्याप्त शैक्षिक समस्याओं को पहचान कर उनके निराकरण करने के लिये भी जागरूक किया है। उसने समायेजन की क्षमता भी विकसित की है, कार्य कुशलता का विकास भी किया है और नई पीढ़ी के निर्माण में शिक्षक की भूमिका को भी सक्षम बनाया गया।

संदर्भ सूची :–

1- राजोरिया, अरूण कुमार :– अधिगम कर्त्ता का विकास एवं, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, 1986 पृ. 24
2- भार्गव, डॉ. प्रतिभा :– बाल्यावस्था एवं अभिवृद्धि, 1951 पृ. 39
3- सुनीता, डॉ. :– बाल्यावस्था एवं अभिवृद्धि, 1955 पृ. 40
4- चौहान, रीता :– बाल्यावस्था एवं उसका विकास,1965 पृ. 13
5- सिंह, ए .के. :– शिक्षा मनोविज्ञान, भारतीय भवन, पटना, 1994 पृ. 57
6- प्रीति, अरोड़ा :– अधिगम कर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगत प्रक्रिया, नई दिल्ली, 1975 पृ. 47
7- पाठक, पी. डी. :– बाल्यावस्था एवं उसका विकास, नई दिल्ली, 2015 पृ. 13
8- प्रीति, अरोड़ा :– अधिगम कर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, 1955 पृ. 48
9- वही पृ.
10- पाराशर डॉ. प्रतिभा :– बाल्यावस्था एवं अभिवृद्धि, नई दिल्ली, 1996 पृ.50
11- सिंह, ऐ. के. :– शिक्षा मनोविज्ञान, भारतीय भवन, पटना, 1994 पृ. 60